रत्नेश्वर मंदिर

पूर्वाभिमुख इस मंदिर में उत्तर एवं दक्षिण दोनों दिशाओं से सोपानों द्वारा प्रवेश की व्यवस्था है । वास्तु योजना में क्रमिक रुप से इस मंदिर में मुखमण्डप, प्रवेश गलियारा, कक्षासन एवं प्रदक्षिणा पथ युक्त मण्डप तथा गर्भगृह हैं । उत्तरी एवं दक्षिणी हिस्से में पार्श्व देवताओं हेतु स्थान नियत हैं । यद्यपि स्तम्भ युक्त मण्डप में एक शिवलिंग स्थापित है तथापि मुख्य देवता गर्भगृह में विराजमान है । मण्डप की छत का अंदरुनी हिस्सा कुंडलिकार है, जबकि गर्भगृह क्रमशः घटते क्षेत्रफल वाले पाषाण पटिट्काओं के वलय के रुप में है। प्रवेश द्वार को शिव, विष्णु, मालाधारी गन्धर्वो व गायकों के अंकन से सुसज्जित किया गया है । ललाटबिम्ब पर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की प्रतिमाएं उकेरी गई हैं । सभा मण्डप व पार्श्व देवताओं के कक्ष के ऊपर गुम्बदाकार छत की योजना है। गर्भगृह का शिखर लघु शिखरों से युक्त वक्र रेखीय है तथा उनसे छलाँग लगाते सिंहों को प्रदर्शित किया गया है । आमलक के ऊपर कलश विद्यमान है किन्तु शीर्ष शंकु लुप्त हो चुका है । मंदिर के दक्षिण भाग में एक अन्य नागर शैली का लघु देवालय अवस्थित है।

रणछोड़जी मंदिर

पूर्वाभिमुख, ऊँचे अधिष्ठान पर निर्मित यह मंदिर भगवान् विष्णु एवं रुकमणि को समर्पित है, जिसमें पहुँचने के लिए सीढियाँ हैं । संगमरमर निर्मित मुख्य प्रतिमा गर्भगृह में स्थापित है । गर्भगृह के सामने आयताकार मंडप मौजूद है जिसमें पूर्वी एवं दक्षिणी भाग में कक्षासन हैं , जबकि उत्तरी एवं पश्चिमी भाग बंद है । गर्भगृह के चतुर्दिक प्रदक्षिणा पथ का संयोजन किया गया है ।

शाही महल

दुर्ग में अवस्थित पाँच महलों का समूह क्रमशः रंग महल, सर्वोत्तम विलास, गज महल / गज विलास, जनाना महल तथा मोती महल सभी के लिए आकर्षण का केंद्र हैं । हवा पोल के ठीक ऊपर स्थित रंग महल, महारावल मूलराज द्वितीय (सन् 1762–1820 ई.) द्वारा बनवाया गया । भित्ति चित्रों एवं अन्य अलंकरणों से युक्त होने के कारण ही इसे रंग महल कहा जाता है । सभी महलों में सर्वाधिक सुंदर सर्वोत्तम विलास का निर्माण महारावल अखयसिंह द्वारा करवाया गया । नीले रंग की टाईल्स तथा काँच के मोजेक अलंकरण के कारण यह शीशमहल जैसा प्रतीत होता है। इन इमारतों के निकट ही ऊँचे प्रतिष्ठान पर गज विलास स्थित है जिसे महारावल गजसिंह ने सन् 1884 ई. में बनवाया । यह तीन मंजिला भवन है जिसकी प्रत्येक मंजिल बाहर की ओर झाँकती अलंकृत दीर्घाओं की श्रृंखला से सुसज्जित है । इसका अग्रभाग सुराहीदार स्तम्भों तथा नुकीले शीर्ष वाले मेहराबों पर आधारित है। सर्वोत्तम विलास महल के पीछे के भाग की रिक्तता को रंगमहल एवं जनाना महल की भव्य उपस्थिति ने पूर्ण कर दिया है । इसके सम्मुखीय मेहराब की सजावट अत्यधिक आकर्षक है तथा वानस्पतिक अलंकरणों से युक्त है । मोती महल का निर्माण सन् 1813 ई. में महारावल मूलराज द्वितीय के द्वारा करवाया गया ।

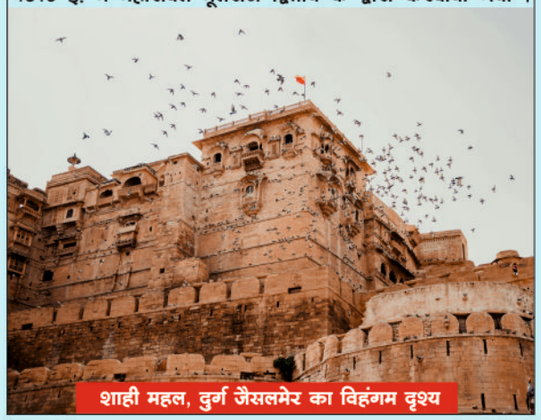

शाही महल, दुर्ग जैसलमेर का विहंगम दृश्य

विभाग द्वारा करवाए गए संरक्षण कार्य

वस्तुतः दुर्ग का निर्माण राज परिवार के निवास के उद्देश्य से कराया गया था, लेकिन कालांतर में बढ़ती आबादी तथा अतिरिक्त निर्माण वर्तमान में दुर्ग पर अतिरिक्त भार बन गया है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव दुर्ग की वहन क्षमता पड़ता है। व्यवसायिक गतिविधियाँ एवं अधिक आबादी होने से अधिक मात्रा में जलस्त्राव होना स्वाभाविक है जो कि स्मारक अवस्थित सरंचनाओं, सुरक्षा प्राचीर त्रिकुटा पहाड़ी की मजबूती के लिए एक चुनौती है । भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा किले की सुरक्षा हेतु समय –समय पर संरक्षण के प्रयास किये जाते रहे हैं तथापि इसके दीर्घायु होने हेतु आम नागरिकों एवं स्थानीय शासन से सहयोग की महती अपेक्षा है। विभाग द्वारा किये गए प्रमुख संरक्षण कार्यो में किले की प्राचीर एवं बुर्जो के क्षरित भाग का संरक्षण तथा दीवार में आई दरारों को रोकना आदि है । विगत में बने मुख्य प्रवेश द्वारों के क्षरित पाषण खण्डों को बदल दिया गया है तथा क्षतिग्रस्त बुर्जो को भी दुरस्त किया गया है। हिन्दू एवं जैन मंदिरों के गुम्बदों व छतों को जलनिरोधक बनाना तथा उनके पलस्तरों के मरम्मत का कार्य महत्वपूर्ण है। शिखर में मौजूद जोड़ों को चिनाई के द्वारा पुनः मजबूती प्रदान की गई है । विभाग द्वारा हाल ही में करवाए गए कुछ संरक्षण कार्यो की झलक इस प्रकार है :

दुर्ग की पिचिंग दीवार का संरक्षण

बुर्ज संख्या 38 का संरक्षण एवं जीर्णोद्धार

दुर्ग की पिचिंग दीवार का संरक्षण

दुर्ग की पिचिंग दीवार का संरक्षण

स्मारक के बारे में बुनियादी जानकारी

अधिसूचना संख्या : 1951 का अधिनियम संख्याक LXXI दिनांक 28.11.1951

पहुँच : निकटतम हवाई अड्डा : जैसलमर, निकटतम रेलवे स्टेशन : जैसलमेर, निकटतम बस स्टेंड : जैसलमेर ।

निकटवर्ती आकर्षक स्थल : पटवा हवेली, सालम सिंह की हवेली, नथमल की हवेली, टीलों की पीरल, प्राचीन गाँव – कुलधरा, किशनगढ़ दुर्ग, घोटारु दुर्ग, गणेश दुर्ग, बड़ा बाग, डेजर्ट राष्ट्रीय उद्यान, लौद्रवा, तनोट माता मंदिर ।

सुविधाएँ : पीने का पानी, शौचालय, सांस्कृतिक पट्टिकाएँ एवं दिशा सूचक पट्टिकाएँ ।

सर्वोत्तम भ्रमण अवधि : अक्टुबर से मार्च ।

विशिष्ट कार्यक्रम : डेजर्ट फेस्टिवल (प्रति वर्ष जनवरी– फरवरी माह के दौरान आयोजित किये जाने वाले इस उत्सव में पश्चिमी राजस्थान के लोक संस्कृति को प्रदर्शित करते कई कार्यक्रम शामिल हैं यथा कठपुतली नृत्य, लोक नृत्य, ऊँट सफारी, रेतीले घोरों पर सफारी, कलाबाजियाँ, संगीत, सम का सूर्यास्त, अग्नि नृत्य, बाड़मेर का गैर नृत्य आदि) गणगोर उत्सव (प्रति वर्ष 18 दिवसों के इस पारंपरिक संगीत मय उत्सव में महिलाएँ मुख्यतया अविवाहित कन्याएं भगवान शिव एवं देवी पार्वती की पूजा करती हैं तथा मूर्तियाँ सजाई जाती हैं।) रामदेवरा मेला (जोधपुर– जैसलमेर मार्ग पर अवस्थित पोकरण में लोक देवता बाबा रामदेवजी का मंदिर है, जहाँ प्रति वर्ष अगस्त– सितम्बर में विशाल मेला का आयोजन होता है जिसमें देशभर से श्रद्धालु दर्शन को आते हैं) ।

घड़ीसर झील, जैसलमेर का विहंगम दृश्य

अपील : इस गौरवमयी स्मारक की समुचित सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु आने वाले सभी पर्यटकों तथा नागरिकों से सहयोग अपेक्षित है निवेदन है कि :

1. सोनार दुर्ग जैसलमेर की जल निकासी प्रणाली अनुपम अभियांत्रिकी का उदाहरण है, कृप्या इसे बंद न होने दें ।,
2. दुर्ग की रक्षा प्राचीर पर न चलें ।
3. दुर्ग में अवस्थित एतिहासिक संरचनाओं की दीवारों पर कुछ न लिखें एवं न ही कुछ उकेरें।
4. दुर्ग की नालियों व अन्य भागों में कूड़ा– करकट या अन्य अपशिष्ट न फेंके।
5. दुर्ग पर वाहन लेकर ना जायें ।
6. .देश की धरोहरों का संरक्षण हम सबका नैतिक दायित्व है, इसे आगामी पीढ़ी के लिए सहेजें ।

अवधारणा एवं निर्देशन : डॉ. बीरी सिंह, अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
आलेख प्रस्तुतीकरण : रामनिवास मेघवाल, सहायक पुरातत्त्वविद्

"आतो सुरगां नै सरमावै, ई पर देव रमण नै आवै,
ई रो जस नर नारी गावै,धरती धोरां री !"
– कन्हैया लाल सेठिया

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

शाही महल, जैसलमेर दुर्ग

दुर्ग जैसलमेर

"घोडा कीजे काठ का पग कीजे पाषाण,
अख्तर कीजे लोहे का तब पहुंचे जैसाण
लंका ज्यूँ अगजीत है, घणा घाट रे घेर
रिधू रहीसी भाटियां, मही पर जैसलमेर"
(जैसलमेर री ख्यात)

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
जोधपुर मण्डल, जोधपुर
सम्पर्क सूत्र : 0291–2750029, 2750032

(2025)

हमारी विरासत.....हमारा गौरव

दुर्ग जैसलमेर

राजस्थान के सुदूर पश्चिम अंचल में मरु प्रदेश प्राचीन काल में 'माडधरा ' अथवा 'वल्लभ मण्डल' के नाम से प्रसिद्ध था । 250 फीट ऊँची पहाड़ी पर अवस्थित यह दुर्ग नियमित अन्तराल पर बुर्ज मय दोहरी सुरक्षा प्राचीर युक्त है । प्रख्यात फिल्म निर्माता और लेखक, सत्यजीत रे ने दुर्ग की सुंदरता से प्रभावित होकर 1971 में 'सोनार किला' नामक उपन्यास लिखा एवं कालांतर में इस उपन्यास पर आधारित एक फिल्म का निर्देशन किया । इसी उपन्यास के बाद इस दुर्ग को सोनार किला /स्वर्ण दुर्ग के नाम से जाना जाने लगा । किवदंती अनुसार महाभारत युद्ध के बाद यादवों का मथुरा से काफी संख्या में बहिर्गमन हुआ तथा वे राजस्थान एवं गुजरात की ओर अग्रसर हुए। त्रिकुट पहाड़ी पर स्थित यह दुर्ग अपनी विशिष्ट शानो शौकत के साथ मध्यकाल में भाटी शासकों की राजधानी रहा है । पीले रंग के बलुआ पत्थर से निर्मित यह सुदृढ़ दुर्ग भाटी शासकों के गौरव का जीता जागता प्रमाण है । भाटी मूलतः पंजाब के सियालकोट क्षेत्र के निवासी थे, जिन्होनें छठी शताब्दी ईस्वी में सम्पूर्ण पंजाब पर आधिपत्य कर लिया था एवं सातवीं शती में जैसलमेर से 120 किमी उत्तर–पश्चिम में स्थित तनोट पर अधिकार करने में सफल रहे। सन् 731 ई. में प्रथम भाटी शासक 'केहर' ने यहाँ गढ़ी का निर्माण किया। 10 वीं सदी में भाटी शासक देवराज ने लौद्रवा पर अधिकार किया। दुर्ग की नींव भोजदेव के पुत्र जैसल ने 12 वीं सदी में रखी तथा जैसल के पुत्र एवं उत्तराधिकारी शालिवाहन द्वितीय ने 1244 ई. में किले का निर्माण पूर्ण करवाया। 13–14 वीं सदी में रक्षा उदेश्यों के लिए किले की दीवारों का निर्माण किया गया ।

दुर्ग में उत्तर– पूर्व से चार क्रमिक विशाल प्रवेश द्वारों क्रमशः अक्षै पोल, गणेश पोल, सूरज पोल एवं हवा पोल के माध्यम से पहुँचा जा सकता है । इनमें से अक्षै पोल का निर्माण अन्तिम भाग में किया गया जिसे महारावल अक्षयसिंह (सन् 1727–62) ने बाहरी प्राचीर के विस्तार के समय निर्मित करवाया । जैसलमेर के शासक मूर्तिकला और वास्तुकला के महान संरक्षक थे । कई सुंदर हिन्दू एवं जैन मंदिरों, शानदार महलों, हवेलियों तथा विशाल प्रवेश द्वारों से सुसज्जित यह दुर्ग राज मिस्त्रियों के कौशल और निपुणता तथा भाटी शासकों की कलात्मक उत्कृष्टता का सजीव उदाहरण है जो पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। हिन्दू धर्म के साथ दुर्ग में जैन धर्म से संबंधित कई मंदिरों का निर्माण किया गया यथा शांतिनाथ मंदिर, सम्भवनाथ मंदिर, चन्द्रप्रभु मंदिर, ऋषभदेव मंदिर, शीतलनाथ मंदिर, महावीर मंदिर आदि । हिन्दू मंदिरों में लक्ष्मी नारायण मंदिर, चामुण्डा माता मंदिर, रत्नेश्वर मंदिर, रणछोड़जी मंदिर एवं सूर्य मंदिर प्रमुख हैं। दुर्ग के अन्दर पाँच अद्भुत महलों का समूह है जिन्हें रंग महल, सर्वोत्तम विलास, गज महल, जनाना महल तथा मोती महल के नाम से जाना जाता है। दुर्ग की समस्त संरचनाएँ पत्थर पर बारीक नक्काशी युक्त प्रक्षेपित झरोखे, जालीदार खिड़कियाँ, अलंकृत पोर्च एवं स्तंभ युक्त हैं । जैसलमेर कस्बे की एक चौथाई आबादी दुर्ग के अन्दर ही निवासरत है । यह राजस्थान का दूसरा सबसे प्राचीन रियासती राज्य है । दुर्ग देश के श्रेष्ठत्तम धान्वन दुर्गो में से एक है। जैसलमेर की हवेलियाँ स्थापत्य कला की बेजोड़ मिसालें हैं ।

अक्षै प्रोल : दुर्ग जैसलमेर का प्रथम प्रवेश द्वार

प्रवेश द्वार 'प्रोल' : दुर्ग में चार प्रवेश द्वार हैं, जिनमें प्रथम द्वार 'अक्षै पोल' है, जिसके निकट वर्ष 2022 में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने उच्च दण्डयुक्त राष्ट्रीय ध्वज लगाया है। पाषाण गुटिकाओं से निर्मित रास्ते पर चलते हुए द्वितीय प्रवेश द्वार 'सूरज प्रोल' आता है जिसे महारावल भीमसिंह ने बनवाया। इस द्वार के उपरी भाग पर एक मेहराबदार तोरण बना है जिसमें सूर्य का अंकन है। इसके दाहिने भाग में अष्टकोणीय छतरी युक्त निगरानी स्तम्भ स्थित है।

सूरज प्रोल : दुर्ग जैसलमेर का द्वितीय प्रवेश द्वार

दूसरे नोंकदार द्वार को पार करने के पश्चात एक तीखा मोड़ है, जिसके ठीक बाद गणेश प्रोल अथवा भूटा प्रोल स्थित है । उक्त द्वार के ललाट बिम्ब पर गणेश प्रतिमा की उपस्थिति के कारण ही संभवतया इसे **गणेश प्रोल** की संज्ञा दी गई । कुछ आगे बढ़ने पर **हवा प्रोल** अथवा रंग पोल अपने शीतल हवा के झोंकों से थके हुए पर्यटकों का स्वागत करता है । इस प्रवेश द्वार के भीतरी कक्ष में पाषाण की शिलाएं आज भी पथिकों को विश्राम देती हैं । बाद के तीनों प्रवेश द्वार 1577 से 1623 के मध्य बनाये गए ।

गणेश प्रोल : जैसलमेर दुर्ग का तृतीय प्रवेश द्वार

हवा प्रोल : जैसलमेर दुर्ग का चतुर्थ एवं अन्तिम प्रवेश द्वार

पार्श्वनाथ मंदिर

किले में स्थित मंदिरों में यह सर्वाधिक प्राचीन तथा अलंकरण युक्त मंदिर है । मूल वास्तु योजना में यह मंदिर चार स्तंभों पर आधारित मुखमण्डप के बाद क्रमिक रुप से नटमण्डप, भोगमण्डप, अंतराल तथा गर्भगृह का संयोजन किया गया है । मंदिर के भीतरी दीवारों पर मानव व पशुओं की सुंदर आकृति सज्जित की गई है। नागर शैली में निर्मित मंदिर का शिखर, आमलक से सुसज्जित है जिसके ऊपर एक कमल पुष्प युक्त कलश है । नटमंडप के छत के भीतरी भाग में पाषाण घटित सौंदर्य का सघन अंकन किया गया है । नाट्य मण्डप से जुड़ा बरामदा क्रमबद्ध स्तम्भों की दोहरी पंक्तियों से घिरा है तथा इनकी छत पाषाण घटित सजावटों से परिपूर्ण है। पार्श्व भाग में कक्षों की एक श्रृंखला है जिसमें तीर्थंकर की प्रतिमा विराजमान है । मण्डप के स्तम्भों में नौ मीनारों की उपस्थिति के कारण यह मंदिर नवतोरणीय भी कहा जाता है । मंदिर का जंघा भाग मिथुन युग्मों की आकृतियों से अलंकृत है ।

चंद्रप्रभु जी मंदिर

पार्श्वनाथ मंदिर के दाहिने पार्श्व में स्थित यह सीढ़ीदार पायदान युक्त है। यह तीन मंजिला मंदिर है, जिसका रंगमण्डप गुम्बदाकार है। मंदिर की मुंडेर लघु शिखरों की श्रृंखला द्वारा निर्मित है । मुख्य शिखर और इसके उरुश्रृंगों की वक्र रेखा, उसी सतह पर क्रमशः ऊपर की ओर उभरते लघु शिखरों की अनुकृतियों द्वारा निर्मित है।

चन्द्रप्रभु जी मंदिर, जैसलमेर दुर्ग

सम्भवनाथ मंदिर

इस मंदिर का निर्माण सन् 1494 ई. में ओसवाल बंधुओं के द्वारा शुरु किया गया और अगले तीन वर्षों में पूर्ण कर लिया गया । पार्श्वनाथ मंदिर के बायीं ओर स्थित इस मंदिर में पार्श्वनाथ मंदिर के रंगमण्डप से होकर पहुँचा जा सकता है । मूल योजना में यह पार्श्वनाथ मंदिर के ही समान है । रंगमण्डप की अंदरुनी छत वलयाकार उभारयुक्त धारियों से अलंकृत है तथा केंद्र में कमलाकार सजावटी लटकन मौजूद है, जिसमें देवीय संगीतज्ञों तथा नृतकों का सुंदर संयोजन किया गया है । शिखर भाग आकार में लघु है तथा मण्डप की छत घंटाकर है । इस मंदिर के मंडोवर की प्रतीति पार्श्वनाथ मंदिर की अपेक्षा ज्यादा तीक्ष्ण है । मंदिर के निचे दो भूमिगत कक्ष है जिसमें महत्वपूर्ण जैन पांडुलिपियों को सुरक्षित रखा गया है । नृतकों अथवा अन्य सजावटी मूर्तियों का लगभग अभाव है।

शीतलनाथ मंदिर

यह पार्श्वनाथ मंदिर के मुख्य तोरण के दाहिने ओर अवस्थित है, जिसमें पार्श्वनाथ मंदिर के रंगमण्डप से भी पहुँचा जा सकता है तथा मंदिर में सजावटी आकृतियों का उकेरन अपेक्षाकृत कम है।

ऋषभदेवजी मंदिर

चंद्रप्रभु जी मंदिर के दाहिनी ओर अवस्थित इस मंदिर में अर्धमण्डप के ठीक बाद खुला आँगन है, जिसकी छत घण्टाकार है। शिखर का उपरी भाग क्रमशः घटते लघु शिखरों की अनुकृतियों से सुसज्जित है। रंगमण्डप के छत के अंदरुनी हिस्से में सजावटी आकृतियों का अभाव है परन्तु मंडोवर भाग में नारी आकृतियों को स्थान दिया गया है।

शांतिनाथ एवं कुंथुनाथ जी मंदिर

यह एक दोमंजिला मंदिर है जिसमें धरातल अवस्थित गर्भगृह में कुंथुनाथ जी तथा ऊपरी तल में शांतिनाथ जी की प्रतिमा स्थापित हैं। अपेक्षाकृत छोटे से क्षेत्र में विस्तारित जगती तथा चार तोरण स्तम्भयुक्त रंग–मण्डप है । ऊपरी तल के छत का अंदरुनी भाग नृत्यरत प्रतिमाओं से सज्जित किया गया है । मूल प्रासाद की छत सीढ़ीदार पिरामिडाकार स्वरुप में संयोजित है, जिसमें चारों ओर से झाँकती दीर्घाएँ हैं । इस विशिष्ट छत को दहाड़ते सिंहों के अंकन से सज्जित किया गया है जिसमें शीर्ष पर आमलक एवं कलश स्थापित है । वास्तु योजना में यह मंदिर क्रमिक रुप से मुखमण्डप, अर्द्धमण्डप, अंतराल तथा गर्भगृह युक्त है। जैन मंदिरों के साथ–साथ दुर्ग में अनेक हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण हुआ है, जो शैलीगत रुप से जैन मंदिरों के समकक्ष है।

लक्ष्मीनारायण मंदिर

ऊँची जगती पर स्थित यह मंदिर क्षैतिज योजना में कक्षासन एवं प्रदक्षिणा पथ युक्त मंडप तथा गर्भगृह युक्त है जिसमें उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं से प्रवेश किया जा सकता है । गर्भगृह के ऊपर अंगशिखरों से युक्त वक्ररेखीय शिखर मौजूद है । हिंगलाज माता उक्त मंदिर की अधिष्ठात्री देवी है ।

लक्ष्मीनारायण मंदिर, जैसलमेर दुर्ग

सूर्य मंदिर

ऊँचे अधिष्ठान पर स्थित यह मंदिर पूर्वाभिमुख है जिसमें प्रवेश हेतु दोनों ओर से सीढियों की व्यवस्था है । क्षैतिज वास्तु योजना में यह मंदिर अर्ध मण्डप, कक्षासन युक्त मण्डप, अंतराल एवं गर्भगृह में विभाजित है । गर्भगृह के ऊपर लघु शिखरों की प्रतिकृतियों से युक्त वक्ररेखीय शिखर है जिनसे छलाँग लगाते सिंहों का प्रदर्शन है। मंदिर के दक्षिणी पार्श्व में मूल मंदिर से सटा नागर शैली का अन्य लघु देवालय स्थित है ।

चामुण्डा माता मंदिर

चामुण्डा माता को समर्पित यह पूर्वाभिमुख मंदिर वास्तु योजना में मण्डप तथा प्रदक्षिणा पथ युक्त गर्भगृह को समायोजित करता है । मण्डप के सम्मुख एक संकरी दीर्घा है जो मेहराबदार द्वार में खुलता है । मंदिर का आतंरिक भाग सादा है परन्तु बाह्य भाग जगती से लेकर मुंडेर तक पाषाण घटित शिल्प के सौंदर्य से अटा पडा है । पूर्वी भाग के मुंडेर पर संगीतज्ञों को दर्शाया गया है । मंदिर का मुख्य शिखर उरुश्रृंगों युक्त है जिसके चारों दिशाओं में छलाँग लगाते सिंहों को उकेरा गया है एवं शिखर आमलक शंकु शीर्ष युक्त है ।

चामुण्डा माता मंदिर, जैसलमेर दुर्ग